दबाव समूह क्या है? What is Pressure Group in Hindi?

लोगों के समूह जो अपने सामान्य हितों के प्रचार और रक्षा के उद्देश्य से संगठित होते हैं, दबाव समूह कहलाते हैं। भारत में दबाव समूह संगठनों के रूप हैं, जो किसी देश की राजनीतिक या प्रशासनिक व्यवस्था पर इसका लाभ उठाने और अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए दबाव डालते हैं। दबाव समूह प्रशासनिक व्यवस्था का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं।

ये समूह किसी देश की प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था पर या तो यह सुनिश्चित करने के लिए दबाव डालने की कोशिश करते हैं कि उनके हितों को बढ़ावा दिया जाए या यह देखने के लिए कि कम से कम उनके हितों को पृष्ठभूमि में नहीं रखा गया है। कोई भी प्रणाली उनके दृष्टिकोण को ध्यान में रखे बिना प्रभावी ढंग से कार्य नहीं कर सकती है। यह सरकार पर दबाव बनाकर सार्वजनिक नीति को बदलने का प्रयास करता है। यह सरकार और उसके सदस्यों के बीच एक सेतु है।

क-जातीय और सांस्कृतिक हितों को पेश करने के एक वैध साधन के रूप में स्वस्थ और कार्यात्मक दबाव समूहों के उद्भव में बाधा डालते हैं।

अन्य लेख

Two Time Zone in India in Hindi

Role of the Opposition in Democracy in Hindi

Government of India act 1935 in Hindi

Indian Foreign Policy in Hindi

Flood Control: Causes, Effects and Treatment in Hindi

Supreme Court of India in Hindi

Secularism in Hindi

Artificial Intelligence (AI) in Hindi

दबाव समूहों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया

दबाव समूह अक्सर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तीन अलग-अलग तरीकों का उपयोग करते हैं:

नीति निर्माताओं के साथ पैरवी करना: वे विभिन्न तरीकों से उनसे संपर्क करके नीति निर्माताओं, आमतौर पर राजनेताओं और सिविल सेवकों को उनके हितों के बारे में समझाने की कोशिश करते हैं।

प्रॉक्सी का चुनाव करना: वे अपने आदमी को सही जगह पर रखते हैं, जो उनके उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है।

प्रोपेगैंडा चलाना: यहां दबाव समूह जनमत को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि लोकतांत्रिक सरकारों को जनता की राय के अनुसार

काम करना होता है। अनुकूल जनमत उन्हें सरकार को परोक्ष रूप से प्रभावित करने में मदद करता है।

दबाव समूहों के कार्य और विशेषताएँ | **Pressure Groups Work and Responsibility**

दबाव समूह राजनीतिक समाजीकरण के एजेंट होते हैं, जहां तक वे राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति लोगों के उन्मुखीकरण को प्रभावित करते हैं। वे सांस्कृतिक मूल्यों के संचरण और राजनीति में लोगों के व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे राजनीतिक व्यवस्था के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण के कारक हैं। दबाव समूहों के महत्वपूर्ण कार्य और विशेषताएँ निम्न हैं:

विशिष्ट हितों के लिए कार्य**:** कुछ हितों को पूरा करने के लिए दबाव समूह का गठन किया जाता है और तदनुसार राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता संरचना से निपटता है।

आधुनिक और पारंपरिक साधनों का उपयोग करना**:** वे अक्सर राजनीतिक दलों को वित्तपोषित करते हैं, चुनावों के दौरान उम्मीदवारों को प्रायोजित करते हैं और नौकरशाही के साथ संबंध बनाए रखते हैं। वे अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए जाति कार्ड खेलने, पंथ और धार्मिक राजनीति में शामिल होने जैसे प्रभाव हासिल करने के साधन के रूप में पारंपरिक सामाजिक वास्तविकताओं का भी उपयोग करते हैं।

सीमित संसाधनों के लिए संघर्षः दबाव समूह बनाने का एक प्रमुख कारण संसाधनों की कमी है। सामाजिक जीवन में, समाज के विभिन्न वर्गों के संसाधनों पर हमेशा दावे और प्रतिदावे होते हैं।

अपने मुद्दों को उठाने के लिए सीमित राजनीतिक दलों का होना: लोकतांत्रिक राजनीति में, राजनीतिक दलों से समाज के सभी वर्गों के हितों का नेतृत्व करने की अपेक्षा की जाती है। चूंकि लोकतंत्र अंततः एक संख्या का खेल है, कई वर्ग जिनकी आबादी कम है, उनके लिए अपने स्वयं के कारण के लिए एक राजनीतिक दल का होना मुश्किल है। यह निर्वात आमतौर पर एक दबाव समूह के गठन से भरा जाता है।

गतिशील सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है**:** सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक में कोई भी परिवर्तन मौजूदा व्यवस्था को बाधित करता है। ऐसे परिवर्तनों की प्रतिक्रिया में अनेक दबाव समूह उभरे। उदाहरण के लिए; पर्यावरणीय कारणों की प्रतिक्रिया के रूप में हरित राजनीतिक दलों का उदय।

दबाव समूहों के प्रकार | **Types of Pressure Groups**

दबाव समूहों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है:

- कारण या 'प्रचारक' समूह (Cause or 'promotional' groups)
- रुचि या 'अनुभागीय' समूह (Interest or 'sectional' groups)
- अंदरूनी समूह (Insider groups)
- बाहरी समूह (Outsider groups)

कारण या **'**प्रचारक**'** समूह**:** इनकी जनता से खुली सदस्यता है। वे एक कारण को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ, जो पर्यावरण की रक्षा से संबंधित है।

रुचि या **'**अनुभागीय**'** समूह**:** ये समूह केवल कुछ व्यक्तियों के लिए खुले हैं, जैसे किसी ट्रेड यूनियन के सदस्य, उदहारण पत्रकारों का राष्ट्रीय संघ।

अंदरूनी समूह**:** ऐसे समूहों के सरकार के साथ मजबूत संबंध होते हैं। वे सलाह देंगे और कानून से पहले उनसे परामर्श किया जाएगा जो उस समूह को प्रभावित कर सकते हैं, जैसे कि ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन से स्वास्थ्य से संबंधित मामलों पर परामर्श किया जाएगा।

बाहरी समूह**:** ये समूह अक्सर ऐसी कार्रवाई करते हैं जिसे सरकार अस्वीकार कर देती है। ग्रीनपीस जैसे संगठन अक्सर अपनी बात को पुष्ट करने के लिए सविनय अवज्ञा या प्रत्यक्ष कार्रवाई में शामिल होते हैं। कुछ बाहरी समूह भी होते हैं और अपने उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए लोगों को आकर्षित करने के लिए बहुत अधिक प्रचार का उपयोग करते हैं ।

दबाव समूहों से संबंधित मुद्दे | **Pressure Group Related Issues**

कभी-कभी उनके पक्षपाती हित कुछ सदस्यों तक सीमित होते हैं। व्यावसायिक समूहों और बड़े सामुदायिक समूहों को छोड़कर अधिकांश पीजी का स्वायत्त अस्तित्व नहीं है। वे अस्थिर हैं और प्रतिबद्धता की कमी है, उनकी वफादारी राजनीतिक परिस्थितियों के साथ बदल जाती है जिससे सामान्य कल्याण को खतरा होता है। वे कई बार हिंसा जैसे असंवैधानिक साधनों का सहारा लेते हैं। 1967 में पश्चिम बंगाल में शुरू हुआ नक्सली आंदोलन ऐसा ही एक उदाहरण है। और चूंकि दबाव समूह निर्वाचित नहीं होते हैं, इसलिए यह उचित नहीं है कि वे लोकतंत्र में महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लेते हैं।

भारत में, संगठित समूह नीति निर्माण के बजाय प्रशासनिक प्रक्रिया को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। यह खतरनाक है क्योंकि नीति निर्माण और कार्यान्वयन के बीच एक अंतर पैदा होता है। कई बार जाति और धर्म के कारक सामाजिक-आर्थिक हितों को ग्रहण करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि राजनीतिक प्रशासनिक प्रक्रिया में उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति करने के बजाय, वे संकीर्ण स्वार्थों के लिए काम करने के लिए कम हो जाते हैं।

इसके अलावा, संसाधनों की कमी के कारण कई समूहों का जीवन बहुत छोटा है। यह दबाव समूहों के मशरूम के विकास के साथ-साथ उनके मुरझाने का कारण बताता है क्योंकि इन दबाव समूहों को बनाने के लिए शुरू में आकर्षित व्यक्तियों के हित को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

भारत में दबाव समूह**, Pressure Groups in India**

भारत एक विविधतापूर्ण देश है लेकिन फिर भी लोग एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह अनेकता में एकता का सच्चा उदाहरण है। हालाँकि, चूंकि भारत एक विविध देश है, इसलिए समाज के विभिन्न वर्ग अलग-अलग हितों और नियमों के साथ हैं। भारत का संविधान सभी को अपने हितों की रक्षा करने और बढ़ावा देने का अधिकार देता है इसलिए ये दबाव समूह कार्य करते हैं और जब भी उन्हें लगता है कि किसी भी सरकारी नीति से उनके हितों का उल्लंघन होता है, तो वे सरकार के फैसले को बदलने की कोशिश करते हैं।

भारत में राजनीतिक दल और दबाव समूह मिलकर सत्ता संघर्ष में बड़ी भूमिका निभाते हैं। भारत में दबाव समूह औपनिवेशिक काल में भी उत्पन्न हुआ। अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस मजदूर वर्ग का पहला देशव्यापी दबाव समूह था। भारत में प्रमुख दबाव समूह निम्न हैं:

व्यापार समूह**:** फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की), मराठा चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एमसीसीआई) (एसोचैम), फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया फूडग्रेन डीलर्स एसोसिएशन, आदि

ट्रेड यूनियन - अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एआईटीयूसी), भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इंटक)

व्यावसायिक समूह**:** इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA), बार काउंसिल ऑफ इंडिया (BCI), IPS एसोसिएशन

कृषि समूह- अखिल भारतीय किसान सभा, भारतीय किसान संघ, शेतकारी संगठन, आदि

छात्र संगठन**:** अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी), अखिल भारतीय छात्र संघ (एआईएसएफ), भारतीय राष्ट्रीय छात्र संघ (एनएसयूआई)

धार्मिक समूह**:** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी), जमात-ए-इस्लामी, आदि।

जाति समूह**:** दलित पैंथर, हरिजन सेवक संघ, नादर जाति संघ, आदि

भाषाई समूह**:** तमिल संघ, आंध्र महा सभा, संभाजी ब्रिगेड, आदि

जनजातीय समूह**:** नैशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ़ नागालैंड (NSCN), ट्राइबल नेशनल वालंटियर्स (TNU), त्रिपुरा में, यूनाइटेड मिज़ो फ़ेडरल ऑर्ग, ट्राइबल लीग ऑफ़ असम, आदि।

विचारधारा आधारित समूह**:** नर्मदा बचाओ आंदोलन, चिपको आंदोलन, महिला अधिकार संगठन, भ्रष्टाचार के खिलाफ भारत आदि

भारत जैसे देश में हर मुद्दे का राजनीतिकरण करने की प्रवृत्ति, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आयात हो, दबाव समूहों के दायरे, कामकाज और प्रभावशीलता को सीमित करता है। राजनीतिक प्रक्रिया पर प्रभाव डालने वाले दबाव समूहों के बजाय, वे राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए उपकरण और उपकरण बन जाते हैं। स्वस्थ नागरिक चेतना के विकास को बाधित करने वाले कारक भी नागरिक के वैध सामाजिक-आर्थिक-जातीय और सांस्कृतिक हितों को पेश करने के एक वैध साधन के रूप में स्वस्थ और कार्यात्मक दबाव समूहों के उद्भव में बाधा डालते हैं।

Related Articles:

- Panchayati Raj System in Hindi
- Human Development Index in Hindi
- Climate Change in Hindi
- Bharat Sarkar Adhiniyam 1935

Buy UPPSC Online Course and UPPSC Test Series to crack the upcoming exam.